- फसल अवशेषों के यथा स्थान प्रबंधन से कृषि भूमि में जल धारण क्षमता में वृद्धि होगी।
- फसल अवशेषों के जलाने से हवा द्वारा आग फैलने की समस्या से भी छुटकारा मिलेगा। इसके अतिरिक्त फसल मित्र कीट जो आग के साथ जलकर नष्ट हो जाते थे, मृदा की उर्वरा शक्ति कम होने की समस्या बढ़ती जा रही थी, उस पर भी नियंत्रण पाया जा सकेगा।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन योजना

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन योजना इन–सीटू मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप रेजडयू के अंतर्गत लाभार्थियों के चयन हेतु विशेष अभियान निम्नवत है।

योजना अंतर्गत निम्नलिखित कृषि यंत्रों पर अनुदान

हाइड्रोलिक रिवेर्सेबुल एम.बी. प्लाऊ, जीरो टिल सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल, सुपर स्ट्रा मैनेजमेंट सिस्टम, हैप्पी सीडर, पैडी स्ट्रॉ चापर, श्रेडर/मल्चर, रोटरी स्लैडर, लाभार्थियों का चयन जनपद के उप कृषि निदेशक कार्यालय पर कैंप लगाकर "प्रथम आवक–प्रथम पावक" एवं पहले बैंक ड्राफ्ट लाओ और कृषि यंत्रों/कस्टम हायरिंग सेंटर और फार्म मशीनरी बैंक पर अनुदान पाओ के आधार पर किया जाता है।

प्राथमिकता निरधारण हेतु धरोहर धनराशि का प्रावधान है

1) एक लाख तक का अनुदान वाले यंत्रों हेतु रु. 2500/– का बैंक ड्राफ्ट जमा करना होगा।
2) एक लाख से अधिक अनुदान वाले कृषि यंत्रों हेतु रु. 5000/– का बैंक ड्राफ्ट जमा करना होगा।
3) बैंक ड्राफ्ट यूपी स्टेट एग्रो इंडस्ट्रियल कारपोरेशन लिमिटेड के नाम से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूपी एग्रो शाखा, विधान सभा मार्ग, लखनऊ के पक्ष में देय होगा।
4) मशीनरी बैंक हेतु राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एन.आर. एल.एम. के महिला समूह/कृषक उत्पादक संघ समूह को प्राथमिकता दी जाएगी।
5) कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना हेतु व्यक्तिगत रूप से भी किसान निर्धारित यंत्रों पर अनुदान प्राप्त कर सकते हैं।
6) 11 लाख से 18 लाख की लागत वाले फार्म मशीनरी बैंक/कस्टम हायरिंग सेंटर हेतु ट्रैक्टर एवं लेजर लैंड लेवलर लेना अनिवार्य है।
7) ट्रैक्टर एवं लेजर लैंड लेवलर सहित अन्य कृषि यंत्रों पर 40 प्रतिशत अनुदान अनुम्नय है, इनके साथ इन–सीटू के तीन या अधिक संयंत्र लेना अनिवार्य है, जिन पर 80 प्रतिशत अनुदान देय है।
8) बैंक ड्राफ्ट आवेदन के साथ प्राप्त किया जाएगा एवं उसी समय चयन पत्र दे दिया जाएगा।

उप कृषि निदेशक समस्त आवेदन पत्रों एवं बैंक ड्राफ्ट के विवरण एक रजिस्टर में तिथि एवं समय के साथ अंकित करेंगे जिससे प्रथम आवक प्रथम पावक की वरीयता निर्धारित होगी। निर्धारित समय में कृषि यंत्र क्रय पर बिल एवं अन्य समस्त आवश्यक अभिलेख उपकृषि निदेशक कार्यालय में उपलब्ध कराने पर जमा धरोहर राशि का ड्राफ्ट किसान को वापस कर दिया जाएगा अन्यथा चयन के उपरांत कृषि यंत्र कास्टम हायरिंग सेंटर फार्म मशीनरी बैंक न लेने की दशा में ड्राफ्ट के रूप में जमा धरोहर धनराशि जप्त कर ली जायेगी।

रणधीर नायक, रुद्र प्रताप सिंह, आर.के. सिंह, ए.के. सिंह एवं डी.के. सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र कोटवा, आजमगढ

शहरी मधुमक्खी पालनः एक लाभदायक साइड बिजनेस

अपने मधुमक्खी पालन के शौक को पैसा कमाने वाले व्यवसाय में बदलें

शहरी मधुमक्खी पालन न केवल आपको प्रकृति के करीब लाता है, बल्कि यह इस बात की भी गारंटी देता है कि यह महत्वपूर्ण परागकण पारिस्थितिकी तंत्र में पनपता है। शहरी मधुमक्खी पालक छत्ते में मधुमक्खियों के भिनभिनाने, बगीचे में परागण करने और मीठे शहद का उत्पादन करने की आवाज से संतुष्ट हैं। यदि आप एक सफल छत्ता स्थापित करने में कामयाब हो गए हैं, तो संभावना है कि आप आस–पास के अन्य लोगों के लिए संभावना देखेंगे, शायद सामुदायिक उद्यान के बगल में या सहकारी पड़ोसी के पिछवाड़े में। मधुमक्खी पालन व्यवसाय शुरू करने के लिए, किसी भी अन्य व्यवसाय की तरह, इन्वेंट्री में निवेश की आवश्यकता होती हैः इस मामले में, छत्ता। लंबे समय में, मधुमक्खी के छत्ते तुलनात्मक रूप से कम लागत वाले निवेश होते हैंः छत्ता फ्रेम, ब्रूड बॉक्स, मधुमक्खी, सुरक्षात्मक कपड़े, उपकरण, चारा और प्रबंधन की लागत दो छत्ते के लिए लगभग 10000 से 15000 तक होती है जो 10 से 15 वर्षों तक चलनी चाहिए।

बगीचे होने या फूल या पेड़ लगाने से आपकी कॉलोनियों को अमृत और पराग इकट्ठा करने में मदद मिल सकती है। भोजन की तलाश में मधुमक्खी 2 से 3 किलोमीटर तक उड़ती है। इसलिए सुनिश्चित करें कि उस दायरे में खाद्य स्रोत हैं। अमृत शहद का स्रोत है, मधुमक्खियों की कार्बोहाइड्रेट आवश्यकता को पूरा करता है, जबकि पराग प्रोटीन का स्रोत है। मधुमक्खी के छत्ते की स्थापना के लिए अपना खुद का बगीचा होने की

आवश्यकता नहीं है, जो आपके खर्चों को और भी कम करता है। इसके बजाय, विचार करें कि आप इष्टतम परागण कवरेज के लिए रणनीतिक रूप से छत्ते की व्यवस्था कहाँ कर सकते हैं।

शहरी मधुमक्खी पालन के नियम अलग–अलग शहरों में अलग–अलग होते हैं, इसलिए यह देखने के लिए जांच लें कि मधुमक्खी पालन उद्यम शुरू करने से पहले आप जहां रहते हैं, वहां यह प्रथा वैध है या नहीं। शहरों और राज्यों में मधुमक्खी पालन अध्यादेश किसी दिए गए क्षेत्र में अनुमत छत्तों की संख्या से लेकर मधुमक्खी पालन लाइसेंस की आवश्यकता तक सब कुछ विनियमित कर सकते हैं। यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि इस जानकारी के लिए कहाँ जाना है, तो अपने स्थानीय मधुमक्खी पालकों से संपर्क करें जो पहले से ही इस व्यवसाय में लगे हुए हैं और जिनके पास कई वर्षों का अनुभव है, स्थानीय कृषि विभाग या कृषि विज्ञान केंद्र। इस शोध को करने से, आपके प्रोजेक्ट की शुरुआत में आपका बहुत समय और पैसा बचेगा। यदि छत्ते को संपत्ति की सीमाओं या आस–पास के आवासों से सही दूरी पर नहीं रखा जाता है, तो आपको दंडित किया जा सकता है या छत्ते को हटाने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

एक सफल शहद फसल के लिए और, परिणामस्वरूप, लाभ के लिए अपनी मधुमक्खियों को स्वस्थ रखना आवश्यक है। जब आप अपने ऑपरेशन में अधिक पित्ती जोड़ते हैं, तो नियमित रूप से हाइव की जांच में बहुत समय लग सकता है, लेकिन यदि आप शहद के व्यवसाय को सार्थक बनाना चाहते हैं तो आप इसे जारी रखना चाहेंगे। आपकी मधुमक्खियों को परजीवियों सहित कई विभिन्न बीमारियों का खतरा है। कुशल प्रबंधन के लिए, कॉलोनियों को इन दुश्मनों से तत्काल सुरक्षा की आवश्यकता होती है। अमोरी मधुमक्खी रोग (केवल कुछ वायरल, जीवाणु, कवक और प्रोटोजोआ रोग) मधुमक्खी पालन के लिए विनाशकारी हैं। श्वासनली घुन (अकारापिस वुडी), वरोआ घुन (वरोआ डिस्ट्रक्टर और वरोआ जैकबसोनी), ट्रोपिलालैप्स घुन (ट्रोपिलालैप्स क्लारै), ग्रेटर मोम कीट (गैलेरिया मेलोनेला), कम मोम कीट अक्रोइया ग्रिसेला) आदि। इस तरह की बीमारियों के प्रसार का प्रबंधन करने के लिए ग्लेशियल एसिटिक एसिड या 40 फॉर्मेलिन के साथ ब्रूड बॉक्स और मधुमक्खी के छत्ते के फ्रेम को कीटाणुरहित करें, प्रभावित कॉलोनियों का विनाश, छत्ते की बार–बार जांच, संक्रमित कंघी को हटाना और भागों को खोदकर या जलाकर नष्ट करना। मधुमक्खियों के कीटों और रोगों के प्रबंधन के लिए मधुमक्खी के रोगों और शत्रुओं के लक्षणों की सही पहचान और निदान की बहुत आवश्यकता है। हालांकि, शहद उत्पादन के लिए मधुमक्खी पालन के समग्र विकास के लिए एक सफल, कम खर्चीला और पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन की आवश्यकता है।

कई कारक निर्धारित करते हैं कि आप कितना शहद इकट्ठा कर सकते हैं, जिसमें आपका पर्यावरण, वर्ष का मौसम पैटर्न, छत्ते का स्वास्थ्य और चारा तक उसकी पहुंच शामिल है। याद रखें कि शहद मधुमक्खी का पोषण है, इसलिए अपने लिए कोई भी लेने से पहले कॉलोनी को पहले आपूर्ति पर ध्यान दें। कठोर सर्दियों के दौरान, मधुमक्खियां जीवित रहने के लिए सभी उपलब्ध शहद का सेवन कर सकती हैं, जिससे आपके पास कुछ भी नहीं बचेगा। यदि आप शहद उद्योग में उतरना चाहते हैं, तो आपको उस जोखिम को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

शहद के अलावा, आप मधुमक्खी के मोम (और मोम से निर्मित वस्तुएं, जैसे मोमबत्तियां और बाम), मधुकोश, और मधुमक्खी पराग बेचने में सक्षम हो सकते हैं, या उन बागवानों को परागण सेवाएं प्रदान कर सकते हैं जो शहरी छत्ते की मेजबानी करना चाहते हैं लेकिन देखभाल नहीं करते हैं इसके लिए। हालांकि इस बात का कोई आश्वासन नहीं है कि शहरी मधुमक्खी पालन एक व्यवहार्य साइड बिजनेस होगा, अगर यह एक शौक है जिसे आप पहले से ही पसंद करते हैं, तो निश्चित रूप से पैसा बनाना होगा। यदि आप छोटी, बुनियादी मधुमक्खी पालन प्रक्रियाओं को शुरू करते हैं, और आवश्यक शोध करते हैं, तो आपके पास साझा करने या बेचने के लिए पर्याप्त शहद हो सकता है। अपने करीबी परिवार और दोस्तों के लिए मार्केटिंग से शुरुआत करें; एक बार जब उन्हें पता चलता है कि शुद्ध, बिना मिलावट वाले कच्चे शहद का स्वाद कितना अद्भुत होता है, तो बस कुछ ही समय होगा जब दूसरे आपके दरवाजे पर दस्तक देंगे।

– युधिष्ठिर सिंह बागल व पल्लवी घोष
स्कूल ऑफ़ एग्रीकल्चरल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी
आर.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मंडी, गोबिंदगढ़, पंजाब

पादप रोग नियंत्रण हेतु उपयोगी कृषि विधियाँ

सामान्य परिचय– इसके अन्तर्गत ऐसी समस्त कृषि क्रियायें सम्मिलित होती हैं जिन्हें आवश्यकतानुसार अपनाकर फसल के विभिन्न रोगों की संख्या और उनके द्वारा होने वाली हानियों में कमी की जा सकती है। इन क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य परपोशी पौधों की वर्धन अवस्थाओं में सुधार करना है। जिससे वह रोगकारक के प्रतिकूल हों। इसमें प्रयुक्त होने वाली क्रियायें समुन्नत कृषि विधियों के आवश्यक अंग हैं। जिन्हें सरलता से प्रयोग में लाकर रोग, खरपतवार, कीट आदि का भी नियंत्रण किया जा सकता है। समुन्नत कृषि विधियाँ जहाँ एक ओर अधिक उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण हैं, वहीं दूसरी ओर वे फसल सुरक्षा के लिए भी उपयोगी हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि उन्नत कृषि विधियाँ फसलों की रोग सहन करने कि क्षमता को बढ़ाने में